C. CARMINA ARTIFICIOSA (KAVYA).

175, 176.

Opus unum voluminibus duobus compactum. Lit. Devan. Charta Ind. Long. 11. Lat. 5. Linn. plerumque 9. Vol. I. foll. 204. Vol. II. foll. 236.

Inest Raghuvansa Kálidásae poetae, quo carmine epico, undeviginti libros continente, reges a Sole oriundi inde a Dilípa usque ad Agnivarnam celebrantur. In marginibus Mallináthae commentarius adscriptus est. (B.)

Duas esse hujus carminis recensiones, alteram antiquiorem, qualem a Mallinátha exhiberi, alteram recentiorem, a Vrihaspatimisra et Bharatasena scholiastis traditam, Stenzler in editione sua praestantissima pro-Quibus tertiam adderemus, si mutationes a librariis inter scribendum insolenter factae eo nomine dignae essent. Quos mihi codices manu scriptos perlustrare contigit, ii Stenzleri sententiam confirmabant, qua nullum exemplar inveniri statuit, quod unam alteramve recensionem accurate redderet. Mallináthas ipse passim varias lectiones citat, quas in codicibus suis invenerat. Quae nostrorum codicum sit conditio, ita optime cernetur, si librorum I-V. cum Stenzleri editione collatorum variam lectionem recensuero. facto codicem B. plerumque cum Mallinátha consentire, codicem A, quamvis antiquissimum, magis differre, Millianum C. medium occupare locum, codicem vero Bengalicum D. recentissimam exhibere recensionem apparebit. Praeterea varias lectiones addidi, a Mallinátha ipso memoriae traditas.

LIBER I.

3. मोहात् A. B. C. M. quid legerit non constat.
3. प्रणोदितः A. B. C. 11. महीभृतां A. B. C. 14. विभाविना B.
17. जात्मनो pro जा मनोः A. 19. व्यावृता pro ज्ञकुंदिता A. B. C.
etiam a M. laudatur. 21. ज्ञचीन् A. B. 25. धर्मायेच B.
28. दष्टोडंगुष्ट इवाहिना A. B. C. Post d. 34. hoc dist.
in A. additur: गंगां भगीरचेनेच पूर्वेमां पावनस्त्रमां। ईप्सता संतितं
त्यस्ता तेन मंद्रिषु कीज्ञला॥ B. C. pro altero hemistichio
hoc ponunt: इज्जता संतितं तेन न्यस्ता मंद्रिषु कोज्ञलाः॥
36. ज्ञान्तितो pro ज्ञास्थितो A. B. 37. परिगताविव A. 38.
उन्हरे: A. B. C. Inde a 42. dist. nonnulla transposita.
44. 45. 43. A. C. 42. 45. 43. 39. 40. 41. 44. B. 45.
उपागतान् pro उपस्थितान् C. 49. स्क्रंथासक्तसमिलुजोः। ज्ञानिप्रतुद्धमात्पृतै: पूर्यमाणं तपस्विभिः॥ A. B. C. Post d. 52. ज्ञाक्तीर्णमृपिपत्नीनामुरजद्वाररोधिभिः। ज्ञपत्विरिय नीवारभागधेयो चित्र मृगे॥ C.

54. विश्रामये° A.C. 57. पादौ A. 59. 58. C. 61. लक्ष B.C. लक्ष A, idemque in utroque commentarii codice legitur, ideoque restituendum. 67.66. B.C. 68. प्रकाश्चांथकारश्च A. C. 69. शुद्धवंशा B. त pro हि A. 70. विनेतर्मा A. C. वितानं मां B. जान्त्रमपादपं B. C. 71. जुगावंधमवैहि मे A. नवबद्धस्य दंतिनः A.B.C. 72. तस्माद्यथा विमुच्येऽहं A. 73. °नो यथा हृदः B. 76. इमां देवीमृतुस्नातां स्मृत्वा सपदि सत्वरः। प्रदक्षिण-क्रियातीतस्तस्याः कोपमजीजनः ॥ A. B. C. quod distichon in B. quidem subditicium esse (श्रेपक) notatur. Genuinus versus subinde paulum corruptus ita traditur: धर्मलोपभया-दाज्ञीमिमां संचित्य सत्वर: etc. B.C. Post 79. hic versus subditicius: अविहि तदवज्ञानादनपेखं (°नाये° cod.) मनोर्यं। प्रतिबक्षाति हि श्रेय: etc. B. Post d. 80. in B. sed post 81. in C. hoc dist. additur: स त्वनेकांतरां तस्या मदीयां वत्समातरं। जाराधय सपत्नीक: सा वां कानं विधास्यति ॥ 81. स गां मदीयां सुरभे: A.C. Post 83. तामललाटनां रेखां विश्वती सामितेतरां (°संसि° C.)। संध्या प्रातिपदेनेव प्रतिभिन्ना (°द्युतिभिन्ना C.) हिमां-शुना ॥ A. C. 85. महीभृत: A. B. 86. आशंसितावंध्यप्रार्थनं A. B. C. 89. स्थानं pro स्थितं A. B. C. 91. भ्या: pro स्येया: B. 93. जर्जितश्रियं A. B. C.

LIBER II.

6. जाददानां A. B. et Mallinátha, जादधानां C. quod sensu carens etiam in Stenzleri textum irrepsit. 8. गुरुहोम A. B. C. 13. मनोबहाकंपन A. 21. जात्मसिद्धे: A. 31. लग्नांगुलि: B. 35. अवहि A. B. 36. इयं pro इसी A. 38. मतंगजानां pro वनद्विपानां A. 39b. अलेव B. 40b. ह्यगोति A. 43b. तु pro हि A. 45b. विमुख्यतां B. C. 46. गिरिकंदराणां दंष्ट्रामयुखेः शकलं प्रकृषेन् A. गिरिकंदराणां etiam in C. 49. अपराधदंडात् A.C. °रंडात् B. 52ª. वाचो A. 54°. कथ च A. 54°. नु A. B. 58. जातः pro वृत्तः A. C. 60. अधोमुखस्य B. C. 63. वत्म pro पुत्र B. 65. उपयुंह्त etiam pro उपभृंख legi M. monet. 66. जुधे: pro गुरो: A. C. idemque in textu restituendum videtur, quum in nostris quidem M. commentariis vox ग्री: desit, at vero चुपे: reperiatur. Ibid. जीधस्यं A.B. 69. वत्सनिपीतशेषं A.B.C. शृद्धं यशो भूय इव A. B. शृद्धं यशो मूर्तिमिव C. 71. ततस्तु होतारं B. ततस्त्र होतारं B. pro अनंतरं भर्तः. Ibid. अनुभावः pro प्रभाव: A.

LIBER III.

ा. कौमुदीमहिमिति के चित्यदंति M. Postea in C. hoc distichon inseritur: ततो विशां पत्युरनन्यसंततेमिनोर्पं किंचिदिवोद-योन्मुखं। खनन्यसौहार्देरसस्य दोहदं प्रिया प्रपेदे प्रकृतिप्रियंवदा ॥ Post d. 3. मुखेन सा केतकपत्वपांडुना कृशांगयिष्टः परिनेयभूपणा। स्थितात्याताराकरेणेंनेंदुमंडला विभातकत्यां रजनीं व्यडंवयत्॥ A. C.